बच्चों के व्यक्तित्त्व के विकास में शिक्षा की भूमिका

डॉ. रूबी कुमारी

शिक्षा जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है तथा अनुभव के द्वारा हमारे व्यवहार में जो भी परिर्वतन आते है वे सभी शिक्षा के फलस्वरूप है। शिक्षा का अर्थ ही अनुभवों का निर्माण एवं पूनर्निमाण है और इस दृष्टि से पाठशाला के बाहर भी जो अनुभव प्राप्त किये जाते है वे सभी शिक्षा के अंग है। शिक्षा ऐसी प्रक्रिया एवं प्रयास है जिसमें मानव समाज के अधिक परिपक्व लोग, न्यून परिपक्व व्यक्तियों की अधिकाधिक परिपक्वता के लिए प्रयास करते है तथा इस प्रकार शिक्षा मानव जीवन को अच्छा बनाने में योगदान करते है। शिक्षा तथा मानव जाति का जन्म जन्मान्तर का संबंध है। शिक्षा आंतरिक वृद्धि तथा विकास की न समाप्त होने वाली प्रक्रिया हैं और इसकी अवधि जन्म से मृत्यु तक फैली हुई है। शिक्षा का वास्तविक अर्थ मनुष्य को मानव बनाना तथा जीवन को प्रगतिशील, सांस्कृतिक एवं सभ्य बनाना है। यह व्यक्ति तथा समाज की वृद्धि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षा द्वारा ही मनुष्य अपनी विचार शक्ति तथा तर्क शक्ति, समस्या, समाधान तथा बौद्धिकता, प्रतिभा तथा रूझान, घनात्मक भावुकता तथा कुशलता और अच्छे मूल्यों एवं रूचियों को विकसित करता है इसी के द्वारा ही वह मानवीय, सामाजिक, नैतिक और अध्यात्मिक प्राणी में परिवर्तित हो जाता है। मनुष्य प्रतिदिन तथा हर क्षण कुछ न कुछ सीखता रहता है। इसका समस्त जीवन ही शिक्षा है। अतः शिक्षा एक निरन्तर तथा गतिशील प्रक्रिया है।